गुरु नानक – सबद २७

बहुता करम लिखिआ ना जाइ ॥

जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ५

बहुता करम लिखिआ ना जाइ ॥
वडा दाता तिल न तमाइ ॥
केते मंगहि जोध अपार ॥
केतिआ गणत नही वीचार ॥
केते खप तुटहि वेकार ॥
केते लै लै मुकर पाहि ॥
केते मूरख खाही खाहि ॥
केतिआ दूख भूख सद मार ॥
एहि भि दात तेरी दातार ॥
बंद खलासी भाणै होइ ॥
होर आख न सकै कोइ ॥
जे को खाइक आखण पाइ ॥
ओह जाणै जेतीआ मुह खाइ ॥
आपे जाणै आपे देइ ॥
आखहि सि भि केई केइ ॥
जिस नो बखसे सिफत सालाह ॥
नानक पातिसाही पातिसाह ॥२५॥

सार: प्रगति एक परिवर्तनकारी प्रक्रिया है जो हमारे जीवन के हर पहलू को छूती है। जैसे-जैसे जागरूकता प्रकृति के नियमों के साथ प्रवाहित होने लगती है, क्रियाएँ अधिक सहज और संतुष्ट हो जाती हैं। यह सदगुणों के साथ एक सहज संबंध की सुविधा देती हैं, जो हमें हमारे सच्चे स्वंय और हमारे आस-पास के सभी लोगों से निकटता का रिश्ता बनाते हैं।

बहुता करम लिखिआ ना जाइ ॥
नेक कर्मों से होने वाली प्रगति को लिखा नहीं जा सकता।

वडा दाता तिल न तमाइ ॥
सिद्ध-बुद्धि करने वाले दाता के मन में रत्ती भर भी लालच नहीं होता।

केते मंगहि जोध अपार ॥
कई अनंत के ज्ञान पर विजय पाने के लिए ज्ञान की याचना करते हैं।

केतिआ गणत नही वीचार ॥
बहुत से विचार हैं जिनका हिसाब नहीं दिया जा सकता।

केते खप तुटहि वेकार ॥
कई निराशा में हैं और नकारात्मक विचारों से निराश हो जाते हैं।

केते लै लै मुकर पाहि ॥
कई ज्ञान तो हासिल कर लेते हैं लेकिन उसे आत्मसात करने से कतराते हैं।

केते मूरख खाही खाहि ॥
कई अज्ञानी हैं जो जमा करते रहते हैं।

केतिआ दूख भूख सद मार ॥
कई लालच से परेशान हैं और आध्यात्मिक सज़ा की स्थिति में रहते हैं।

एहि भि दात तेरी दातार ॥
मन की सभी विविध अवस्थाएँ सर्वव्यापी का उपहार हैं।

बंद खलासी भाणै होइ ॥
बंधन से मुक्ति प्रकृति के नियमों के अनुसार जीने से मिलती है।

होर आख न सकै कोइ ॥
प्रकृति के नियमों के निर्णय में किसी का कोई दख़ल नहीं है।

जे को खाइक आखण पाइ ॥
वे अज्ञानी, जो दावा करते हैं कि प्रकृति के नियमों के निर्णयों पर उनका अधिकार है।

ओह जाणै जेतीआ मुह खाइ ॥
उन्हें अपनी अज्ञानता का एहसास होता है जब उन्हें निराशा का सामना करना पड़ता है।

आपे जाणै आपे देइ ॥
अदृश्य सर्वव्यापी चेतना अधिकार प्रदान करने के प्रति जागरूक है।

आखहि सि भि केई केइ ॥
कुछ कम लोग ही प्रकृति के नियमों से सहमत होते हैं।

जिस नो बखसे सिफत सालाह ॥
जो लोग प्रकृति के नियमों को स्वीकार करते हैं और उनकी सराहना करते हैं वह धन्य हैं।

नानक पातिसाही पातिसाह ॥२५॥
नानक कहते हैं कि वह लोग राजाओं के राजा हैं। (२५)

तत्त्व: गुरु नानक के अनुसार, वास्तव में सफल वह लोग हैं जो निहित स्वार्थों के लिए ज्ञान या दुनयावी लाभ जमा नहीं करते हैं, बल्कि इन लाभों का उपयोग सार्वभौमिक भलाई के लिए प्रकृति के नियमों के अनुसार ही करते हैं।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com